

Chapter-13

पहलवान की ढोलक

Exercise 13.1

1 Mark Questions

प्रश्न 1. पहलवान की ढोलक" किसने रची थी?

उत्तर: रामधारी सिंह दिनकर ने "पहलवान की ढोलक" रची थी.

प्रश्न 2. कविता में पहलवान की ढोलक की सीरीमें कैसा वर्णन किया गया है?

उत्तर: पहलवान की ढोलक को बहुत मजबूत, ऊर्जावान, और दुर्दत्त कहा गया है।

प्रश्न 3. पहलवान की ढोलक क्या है और इसका क्या महत्व है?

उत्तर: पहलवान की ढोलक एक प्रकार की झाँकी है जो एक पहलवान के हुनर और शक्ति को प्रतिष्ठित करती है।

प्रश्न 4. ढोलक के माध्यम से कवि ने क्या साबित करने का प्रयास किया है?

उत्तर: कवि ने ढोलक के माध्यम से मनुष्य की ऊर्जा, साहस, और संघर्ष को साबित करने का प्रयास किया है।

प्रश्न 5. पहलवान की ढोलक की तुलना किससे हुई है?

उत्तर: पहलवान की ढोलक की तुलना महाकाव्य से हुई है, जिसमें शक्ति, साहस, और योद्धा की भावना सामाहिक रूप से व्यक्त होती है।

प्रश्न 6. कविता में पहलवान की ढोलक का संगीत किसे याद कराता है?

उत्तर: पहलवान की ढोलक का संगीत वीर शिवाजी के युद्ध कला को याद कराता है।

प्रश्न 7. पहलवान की ढोलक के संगीत से कविता में कौनकौन उत्साहित होता है?

उत्तर: गाँव के युवा, वृद्ध, बच्चे, सभी पहलवान की ढोलक के संगीत से उत्साहित होते हैं।

प्रश्न 8. पहलवान की ढोलक का संगीत किसे जागरूक करता है?

उत्तर: पहलवान की ढोलक का संगीत जनता को जागरूक करता है कि उन्हें अपनी शक्ति का सही उपयोग करना चाहिए।

प्रश्न 9. कविता में पहलवान की ढोलक का संगीत किसे प्रेरित करता है?

उत्तर: पहलवान की ढोलक का संगीत गाँववालों को साहसी होने के लिए प्रेरित करता है।

प्रश्न 10. इस कविता के माध्यम से कवि किस संदेश को साझा करना चाहते हैं?

उत्तर: इस कविता के माध्यम से कवि शक्ति, साहस, और संघर्ष के महत्वपूर्ण संदेश को साझा करना चाहते हैं।

Exercise 13.2

2 Marks Questions

प्रश्न 1. क्या यह कहानी रेणु' को आंचलिक कहानीकार बनाती है?

उत्तर: यह कहानी निर्विवाद रूप से रेणु' को आंचलिक कहानीकार बना देती है। ग्रामीण अंचल का इतना यथार्थ और मार्मिक चित्रण पहले शायद नहीं हुआ। ग्रामीण लोक कलाएँ किस तरह विलुप्त होती जा रही हैं इसका चित्रण उन्होंने किया है। यह कहानी पुरानी सत्तात्मक व्यवस्था के टूटने के साथसाथ लोक कलाओं में आ रही रुकावट का चित्रण करती है। बदलते ग्रामीण परिवेश का यथार्थ अंकन करती यह कहानी रेणु' को आंचलिक कहानीकारों की श्रेणी में खड़ा कर देती है।

प्रश्न 2. लुट्टन पहलवान की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में लिखिए।

उत्तर: लुट्टन के मातापिता की मृत्यु नौ साल में ही हो चुकी थी। उसकी शादी हो चुकी थी। उसकी विधवा सास ने उसे पाला और पोसा। वह अपनी सास के यहाँ कसरत करतेकरते बड़ा हो गया। इसी कारण वह पहलवानी में जोर आजमाइश करने लगा।

प्रश्न 3. गाँव में फैली बीमारी से उत्पन्न गाँव की दशा का चित्रण कहानीकार ने किस प्रकार किया है?

उत्तर: गाँव में महामारी ने पाँव पसार लिए थे। चारों ओर मौत का भयानक तांडव फैला था। रेणु' लिखते हैं कि सियारों का क्रंदन और चेचक की डरावनी आवाज़ कभीकभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़ 'हरे राम, हे भगवान! की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे कभीकभी निर्बल कंठों से माँमाँ पुकारकर रो पड़ते थे।

प्रश्न 4. जब मैनेजर और सिपाहियों ने लुट्टन पहलवान को चाँद सिंह से लड़ने से मना कर दिया तो लुट्टन ने क्या कहा?

उत्तर: मैनेजर और सिपाहियों की बातें सुनकर लुट्टन सिंह गिड़गिड़ाने लगा। वह राजा साहब के सामने जा खड़ा हुआ। उसने कहा दुहाई सरकार, पत्थर पर माथा पटककर मर जाऊँगा लेकिन लड़ूँगा अवश्य सरकार, वह कहने लगा लड़ूँगे सरकार हुकुम हो सरकार।

प्रश्न 5. कहानी की संवाद योजना कैसी है? बताइए।

उत्तर: फणीश्वर नाथ रेणु की सभी कहानियों में संवाद योजना देखते ही बनती है। उनकी संवाद योजना चुस्त, सार्थक और प्रभाव उत्पन्न करने वाली है। संवादों के माध्यम से कहानीकार ने पात्रों की मानसिक और चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कर दिया है। लुटन पहलवान की मनःस्थिति का अंकन निम्न संवाद में हुआ है—“दुकानदारों को चुहल करने की सूझती। हलवाई अपनी दुकान पर बुलाता—“पहलवान काका। ताजा रसगुल्ला बना है, जरा नाश्ता कर लो पहलवान बच्चों कीसी स्वाभाविक हँसी हँसकर कहता “अरे तनी मनी काहे। ले आव डेढ़ सेर और बैठ जाता” राजा साहब की विशेषता का उल्लेख इस संवाद में हुआ है।” राजा साहब दस रुपए का नोट देकर कहने लगे जाओ मेला देखकर घर जाओ... “नहीं, सरकार लड़ेंगे हुकुम हो सरकार।

प्रश्न 6. ‘पहलवान की ढोलक’ कहानी के संदेश को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: ‘पहलवान की ढोलक’ कहानी में व्यवस्था के बदलने के साथ लोककला व इसके कलाकार के अप्रासांगिक हो जाने की कहानी है। राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एक दम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह ‘भारत’ पर ‘इंडिया’ के छा जाने की समस्या है जो लुटन पहलवान को लोक कलाकार के आसन से उठाकर पेट भरने के लिए हायतौबा करने वाली निरीहता की भूमि पर पटक देती है।

प्रश्न 7. राजा साहब ने लुटन को क्यों सहारा दिया था? अंत में उसकी दुर्गति होने का क्या कारण था?

उत्तर: लुटन ने बचपन से ही कुश्ती सीखी। उसने चाँद पहलवान को हरा दिया। श्यामनगर के मेले के दंगल में उसने यह चमत्कार दिखाया। राजा साहब ने उसे आश्रय दिया। इसके बाद उसने सभी नामी पहलवानों को हरा दिया। अब वह दर्शनीय जीव बन गया था। पंद्रह साल तक वह राजदरबार में रहा। उसने दोनों बेटों को भी पहलवानी में उतारा। राजा साहब के मरने के बाद नए राजा को घुड़सवारी में रुचि थी। उसने पहलवान व उसके बेटों को राजदरबार से निकाल दिया। अब वह गाँव आकर रहने लगा। यहाँ उसे भोजन भी मुश्किल से मिलना था। महामारी ने उसके बेटों को लील लिया। उनके चारपाँच दिन बाद वह भी मर गया।

Exercise 13.3

4 Marks Questions

प्रश्न 1. लुट्टन से राज पहलवान लुट्टन सिंह बन जाने के बाद की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए?

उत्तर: लुट्टन की कीर्ति राज पहलवान बन जाने के बाद दूरदूर तक फैल गई। राजा ने उसे दरबार में रखा। पौष्टिक भोजन व राजा की स्नेह दृष्टि से उसने सभी नामी पहलवानों को हरा दिया। वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह घुटने तक लंबा चोगा पहनकर अस्तव्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह चलता था। हलवाई उसे मिठाई खिलाते थे।

प्रश्न 2. 'पहलवान की ढोलक' कहानी के आधार पर बताइए कि महामारी फैलने पर चिकित्सा और देखरेख के अभाव में ग्रामीणों की दशा कैसी हो जाती थी। पहलवान की ढोलक उनकी सहायता किस प्रकार करती थी?

उत्तर: महामारी फैलने पर गाँव में चिकित्सा और देखरेख के अभाव में ग्रामीणों की दशा दयनीय हो जाती थी। लोग दिन भर खाँसते कराहते रहते थे। रोज दोचार व्यक्ति मरते थे। दवाओं के अभाव में उनकी मृत्यु निश्चित थी। शरीर में शक्ति नहीं रहती थी। पहलवान की ढोलक मृतप्राय शरीरों में आशा व जीवंतता भरती थी। वह संजीवनी शक्ति का कार्य करती थी।

प्रश्न 3. 'पहलवान की ढोलक' कहानी में किस प्रकार पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या को व्यक्त किया गया है? लिखिए।

उत्तर: 'पहलवान की ढोलक' कहानी में पुरानी और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या को व्यक्त किया है। पुरानी व्यवस्था में राजदरबार लोक कलाकारों को संरक्षण प्रदान करता था। उनके सहारे ये जीवित रहते थे, परंतु नई व्यवस्था में विलायती दृष्टिकोण को अपनाया गया। लोक कलाकार हाशिए पर चले गए।

प्रश्न 4. कहानी के किसकिस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्याक्या परिवर्तन आए?

उत्तर: लुट्टन पहलवान का जीवन उतारचढ़ावों से भरपूर रहा। जीवन के हर दुखसुख से उसे दोचार होना पड़ा। सबसे पहले उसने चाँद सिंह पहलवान को हराकर राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया। फिर काला खाँ को भी परास्त कर अपनी धाक आसपास के गाँवों में स्थापित कर ली। वह पंद्रह वर्षों तक अजेय पहलवान रहा। अपने दोनों बेटों को भी उसने राजाश्रित पहलवान बना दिया। राजा के मरते ही उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से राजकुमार ने आते ही पहलवान और उसके दोनों बेटों को

प्रश्न 5. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

उत्तर: पहलवान ने ढोल को अपना गुरु माना और एकलव्य की भाँति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राजदरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजाबजाकर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुरु सिखाए। ढोल से ही उसने गाँव वालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवनसाथी ही था।

प्रश्न 6. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर: ढोलक की आवाज़ सुनकर लोगों में जीने की इच्छा जाग उठती थी। पहलवान नहीं चाहता था कि उसके गाँव का कोई आदमी अपने संबंधी की मौत पर मायूस हो जाए। इसलिए वह ढोल बजाता रहा। वास्तव में ढोल बजाकर पहलवान ने अन्य ग्रामीणों को जीने की कला सिखाई। साथ ही अपने बेटों की अकाल मृत्यु के दुख को भी वह कम करना चाहता था।

प्रश्न 7. ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था।

उत्तर: महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज़ संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज़ बूढ़े बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज़ में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज़ गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

Exercise 13.4

Summary

कविता "पहलवान की ढोलक" एक पहलवान की ढोलक की गाथा है, जो गाँव की सभी तरह की जनता को उत्साहित करती है। ढोलक एक प्रकार की झाँकी है जो पहलवान की शक्ति, साहस, और योद्धा भावना को प्रतिष्ठित करती है। इसका संगीत गाँववालों को नई ऊर्जा और उत्साह से भर देता है।

कविता में पहलवान की ढोलक की तारीफें की गई हैं और इसे दुर्दंत, ऊर्जावान, और साहसी रूप में वर्णित किया गया है। इसके संगीत से गाँववाले प्रेरित होकर अपने जीवन में नई ऊर्जा और साहस लाते हैं।

"पहलवान की ढोलक" में कवि ने मनुष्य के अंदर छिपी शक्ति को जगाने और सही दिशा में प्रयोग करने के महत्व को बताया है। यह कविता शौर्य, उत्साह, और समर्थन के माध्यम से जीवन में सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करती है।